By:- Lalita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

तुगलक साम्राज्य के पतन के लिए फिरोज तुगलक कहाँ तक उत्तरदायी था।
(How far Firoz Tughlak was responsible for the downfall of Tughlak empire?)

वास्तव में तुगलक वंश का पतन मोहम्मद तुगलक के समय ही आरम्भ हो गया था। फिरोज भी पतन की ओर अग्रसर साम्राज्य को छिन्न-भिन्न होने से न रोक सका। उसी के समय साम्राज्य की समाधि तैयार हो गयी और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गयी।

तुगलक साम्राज्य के पतन के कारण

1. साम्राज्य की विशालता :- तुगलक साम्राज्य विशालता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। आवागमन की असुविधा के कारण सम्पूर्ण साम्राज्य सुचारु रूप से नहीं चल पाता था। विशेषकर दक्षिण भारत पर दिल्ली से नियंत्रण रखना मुश्किल हो गया था। प्रायः सुल्तान का दक्षिण चला जाना उत्तर के लिए घातक सिद्ध हो गया था क्योंकि जब सुल्तान दिल्ली में रहता था तब दक्षिण में अशांति फैल जाती थी।

2. प्रांतपतियों एवं सेनापतियों की स्वार्थपरता :- प्रांतपतियां एवं सेनापतियों साधारणतया अवसर पाते ही विद्रोह कर देते थे।

3. निश्चित उत्तराधिकार के नियम का अभाव :- दिल्ली सल्तनत के राजवंशों में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम नहीं था। अतः प्रायः प्रत्येक सुल्तान को अपने शासन के आरम्भ में षडयंत्रों, कुचक्रों, विद्रोहों तथा प्रतिद्वन्द्विता का सामना करना पड़ता था। इससे दरबार में दलबन्दियों को प्रोत्साहन मिलता था और प्रत्येक दल कठपुतली राजकुमारों को ही सिंहासन पर बैठाकर अपने मनोरथों की पूर्ति करना चाहता था।

* 4. साम्राज्य में संगठन का अभाव :- साम्राज्य को सुदृढ़ तथा सुसंगठित इकाई बनाने का प्रयास कभी नहीं किया गया जिससे विघटनकारी प्रवृत्तियाँ सदैव क्रियाशील रहती थी।

* 5. शासन में विदेशीपन :- साम्राज्य का संचालन तुर्क तथा विदेशी अमीरों द्वारा होता था जिनको भारतीयों की आशा अभिलाषा तथा आकांक्षाओं के साथ कोई सहानुभूति न थी।

* 6. रिक्त राजकोष :- किसी भी साम्राज्य को सुदृढ़ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए धन की आवश्यकता होती है। तुगलक वंश में लगातार युद्ध के कारण राजकोष खाली हो गया था जिससे इसका पतन अवश्यम्भावी था।

* 7. फिरोज की दुर्बलतायें :- फिरोजशाह तुगलक चौदहवीं शताब्दि में सुल्तान बनने की सर्वथा अयोग्य था। उस समय किसी कठोर शासक एवं दृढ़ व्यक्ति की आवश्यकता थी। फिरोज की उदारता का लोगों ने दुरुपयोग किया। सरकारी कर्मचारी एवं सैनिक भ्रष्टाचारी तथा घूसखोर हो गये थे। फिरोज धर्मान्ध था। वह मुसलमानों का पक्ष बंद आँखों से करता था। उससे हिन्दुओं में असंतोष फैल गया जिसका फल आगे चलकर अच्छा नहीं हुआ।

* 8. वृद्धावस्था में फिरोज का गद्दी पर बैठना :- तुगलक वंश के विनाश का एक प्रमुख कारण फिरोज का वृद्धावस्था में गद्दी पर बैठना था। वृद्धावस्था के कारण उसमें उत्साह की कमी थी।